Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. - 12

भारतीय कहानी

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* **M.A. (Hindi), B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

भारतीय कहानी

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper–December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper–June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper–December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper–June, 2018 (Solved) 1-4

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा की कहानियां

1. दीदी : विश्लेषण और मूल्यांकन 1
2. लड़की जिसकी मैंने हत्या की : विश्लेषण और मूल्यांकन 20
3. ट्रेडिल : विश्लेषण और मूल्यांकन 27
4. प्राणधारा : विश्लेषण और मूल्यांकन 38

बांग्ला, असमी और ओड़िया भाषा की कहानियां

5. अपने लिए शोकगीत : विश्लेषण और मूल्यांकन 49
6. एक अविस्मरणीय यात्रा : विश्लेषण और मूल्यांकन 62
7. बघेई : विश्लेषण और मूल्यांकन 70

S.No. Chapterwise Reference Book Page

मराठी, कोंकण, गुजराती और राजस्थानी भाषा की कहानियाँ

8. विद्रोह : विश्लेषण और मूल्यांकन 79

9. ओऽरे चुरुंगन मेरे : विश्लेषण और मूल्यांकन 87

10. चिता : विश्लेषण और मूल्यांकन 96

11. दूजौ कबीर : विश्लेषण और मूल्यांकन 103

उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी और मैथिली भाषा की कहानियाँ

12. टोबा टेक सिंह : विश्लेषण और मूल्यांकन 109

13. अपना-अपना कर्ज : विश्लेषण और मूल्यांकन 115

14. जवाबी कार्ड : विश्लेषण और मूल्यांकन 122

15. पाँच पत्र : विश्लेषण और मूल्यांकन 131

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारतीय कहानी

M.H.D.-12

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) कहते हैं कि म्यून्सिपैलिटी वाले बंगलेवालों के नल बन्द नहीं करते। जब तक लाइन खुली रहती है, तब तक उनको पानी मिलता ही रहता है। मोटरों की सहायता से वे लोग टंकियां भर लेते हैं। लोग तीन-तीन दफा नहाते हैं। चार-पांच बार हाथ-मुँह धोते हैं। चार प्याले भी धोने हों तो आधे घंटे तक धार छोड़ते रहते हैं। अगले दिन टंकी खाली करके पौधों को वह पानी देते हैं।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश तेलुगु के वरिष्ठ कथाकार कालीपट्नम रामाराव की कहानी 'प्राणधारा' से लिया गया है। कहानी के मूल में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि समाज का एक वर्ग पानी जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी तरसता है और दूसरी तरफ धनी वर्ग के लोग हैं, जिनके पास आवश्यकता से अधिक है और उन्होंने समाज के संसाधनों पर भी कब्जा कर रखा है। गांव की स्त्रियां राव साहब के बंगले से पानी भरने जाती हैं, किन्तु वे लोग गरीबों को पानी देने की अपेक्षा अपनी गाड़ियां धोने में पानी व्यर्थ बहा देते हैं। गांव में जाति का महत्त्व बहुत अधिक होता है। इसी संदर्भ में राव साहब के बंगले से लौटते हुए तविटम्मा सत्यवती से राव साहब की जाति पूछती है, तो सत्यवती उससे कहती है कि समाज का एक वर्ग पीने के लिए पानी को भी तरसता है और एक वर्ग खूब पानी बहाता है। इसी अन्याय, शोषण और विडंबना को दिखाया गया है।

व्याख्या–गांव की स्त्रियां आपस में बात करते हुए प्रशासन और अधिकारी-वर्ग के गरीबों के प्रति अन्याय और भेदभाव को दिखाते हुए कहती हैं कि उनकी बस्ती में पानी नहीं आता, क्योंकि म्यून्सिपैलिटी वाले धनी लोगों के क्षेत्र में लगातार पानी की सप्लाई करते हैं, उनको देर तक पानी मिलता है। वे मोटर चलाकर टंकियां भर लेते हैं। दिन में कई बार नहाकर, बार-बार मुँह धोकर, खुला नल रखकर बर्तन धोकर और पौधों में पानी डालकर पानी व्यर्थ बहाते हैं और एक तरफ हम गरीबों को पानी नहीं मिलता।

विशेष–1. गांवों में आज भी जाति के महत्त्व को दिखाया गया है। शहरों में जाति के टूटते बंधनों का भी संकेत है।

2. शहर और गांव के फर्क को दिखाया गया है।

3. अमीर-गरीब के बीच बढ़ते फासले को उजागर करने का प्रयास भी किया है।

4. बोलचाल की भाषा है।

(ख) उन्होंने मन ही मन सोचा कि अगर इस वक्त कुछ बोलते हैं तो अगले ही पल वे बेभाव हो जाएंगे। नहीं, अभी उन्हें बेभाव होने की इच्छा नहीं है। बल्कि वे आँख बन्द किए हुए ही महसूस करेंगे कि डॉक्टर आया है, जांच की है। उसके बुलाने पर उन्होंने जवाब नहीं दिया तो उसने संदेह व्यक्त करते हुए इशारे से समझाया है, सेरेब्राल थ्रंबोसिस हो सकता है, ऐसा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। निर्देश दे रहा है एकदम सुलाए रखें। कंप्लीट रेस्ट।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश बांग्ला की प्रमुख कहानीकार आशापूर्णा देवी की कहानी 'अपने लिए शोकगीत' से लिया गया है। 'अपने लिए शोकगीत' अवकाश प्राप्त यानी रिटायर्ड आदमी अविनाश की कहानी है। अविनाश के परिवार में बच्चे-बहू, पोते-पोती सब हैं। मगर अविनाश को लगता है कि वह अपने घर में अप्रासंगिक हो गए हैं, अकेले हो गए हैं। कोई उनका ख्याल नहीं रखता।

इस कहानी में मनुष्य के मन की भीतरी परतों को कुरेदने-पहचानने की कोशिश की गई है। अवकाश ग्रहण करने के बाद व्यक्ति में एक तरह का खालीपन आ जाता है, वह खुद को अकेला और कमजोर समझने लगता है। उन्हें लगता है कि बच्चे उनकी बातें नहीं मानते। उनसे कोई सलाह नहीं लेता, उनकी बातों को अहमियत नहीं देता। यह एक मनोवैज्ञानिक बदलाव होता है। रिटायरमेंट के बाद भी व्यक्ति की आदतों में बदलाव आता है। इस कहानी में अविनाश में ये मनोवैज्ञानिक लक्षण सहज ही देखे जा सकते हैं। वह दूसरों का अपनी तरफ आकर्षण चाहता है।

NEERAJ PUBLICATION www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इसी मनोवैज्ञानिक स्थिति में अविनाश पलंग पर ऐसे लेट जाता है मानो बेहोश हो, डॉक्टर के आने पर भी वह चेतनाशून्य ही बना रहता है और कुछ नहीं बोलता। इसी स्थिति का उल्लेख करते हुए इन पंक्तियों में अविनाश के मस्तिष्क में चल रहे विचारों का वर्णन है–

व्याख्या–अविनाश ने मन में सोचा कि ये सब लोग अभी मेरी चिंता इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि इन्हें लग रहा है कि मेरी तबियत खराब है, अगर इनकी बातें सुनकर मैंने आँखें खोलीं, तो ये सब लोग फिर मुझे छोड़कर अपने-अपने काम में लग जाएंगे और मेरी फिर कोई महत्ता नहीं रह जाएगी, इसलिए ऐसे पड़े रहना ही अच्छा है। घर के लोग डॉक्टर को बुलाएँगे तो भी उसकी बातें भी आँखे बंद रखकर ही सुनूंगा, इससे पता तो लगेगा कि मेरे परिवार के लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं, मैं उनके लिए क्या महत्त्व रखता हूँ। डॉक्टर के जांच करने पर भी वे निश्चेष्ट पड़े रहते हैं, डॉक्टर के पुकारने का भी कोई जवाब नहीं देते। अतः डॉक्टर को लगता है अविनाश को सेरेब्राल थ्रबोसिस नामक रोग हो गया है। इस बीमारी का संदेह व्यक्त करने पर डॉक्टर घर के लोगों से अविनाश को पूर्ण रूप से विश्राम करने और सुलाए रखने का सुझाव देता है।

विशेष–1. स्वयं को सही ठहराने एवं दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की मानव प्रवृत्ति को दिखाया गया है।

2. व्यक्ति बूढ़ा और सेवानिवृत्त होने पर भी सम्मान एवं अटेंशन चाहता है, इसी भाव की अभिव्यक्ति है।

3. भाषा बोलचाल की एवं सरल है।

4. हिंदी के साथ तत्सम एवं उर्दू व अंग्रेजी व देशी शब्दों का प्रयोग भी है।

(ग) उस पोखर के पश्चिमी किनारे पर खड़े पीपल को बीच से काट डाला गया है और कटे हुए तने के टुकड़े पोखर के बीच में छितरे पड़े हैं। उनके ऊपर एक छतविहीन झोपड़ी है। जीवण ने उसमें एकदम अकेले पड़े हुए एक बच्चे को देखा। सुनहरे बाल उसकी आंखों पर ढके हुए थे और गालों पर बहे हुए आंसुओं की धाराएं सूख गई थीं। बच्चा दाहिने हाथ की छोटी उंगली पकड़े बैठा था। ऊपर देखता ही नहीं वह। जीवण क्या करे? आवाज देकर उसे बुलाने की इच्छा हुई, पर हिम्मत नहीं पड़ी.....वह सपना ही था, लेकिन जीवण की नजर सपने में देखी हुई जगह को अब भी खोजती है।

उत्तर–प्रस्तुत गद्यांश मराठी कहानीकार बाबूराव बागुल की कहानी 'विद्रोह' से उद्धृत है। कहानी के मध्य में भानी अपने बेटे को लेकर नौकरी के लिए ऑफिस में जाती है। वहां काम बांटने वाला क्रिश्चियन साहब मुकादम (ठेकेदार) को बुलाकर जय को कूड़ा ढोने वाली गाड़ी (ठेला) पकड़ा देता है। हालांकि भानी ने बड़े साहब से उसके बेटे को गंदगी साफ करने का काम न देने के लिए सिफारिश कर रखी थी। वह क्रिश्चियन साहब को भी बताती है कि जय दसवीं कक्षा में पढ़ता है, किन्तु क्रिश्चियन साहब कहता है कि जय है तो मेहतर ही और मेहतरी के लिए ही आया है। इसी विक्षिप्त मानसिकता में वह एक सपना देखता है। इसी का वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या–जीवण सपने में देखता है कि पोखर के पश्चिमी किनारे पर लगा पीपल का पेड़ बीच में से काट दिया गया है। उस पेड़ के कटे तने के टुकड़े पोखर में बिखरे पड़े हैं। उन लकड़ी के टुकड़ों पर एक झोंपड़ी है, जिसकी छत नहीं है। उस झोंपड़ी में एक बच्चा अकेला बैठा था। बच्चे के सुनहरे बालों से उसकी आंखें ढक रही थी। वह रोया था, जिसके कारण गालों पर सूखे आंसुओं के निशान थे। बच्चा अपने दाहिने हाथ की अंगुली पकड़े बैठा था। वह नीचे की ओर ही देखे जा रहा है। जीवण उसे आवाज देकर बुलाना चाहता है, किंतु हिम्मत नहीं कर पाता। जीवण ने यह सब सपने में देखा था, लेकिन वह सपने में देखी जगह को ढूंढ़ता है।

विशेष–1. दुख में व्यक्ति स्वप्न को भी सच मानकर उसे यथार्थ में देखना चाहता है।

2. मन की गहन व्यथा की अभिव्यक्ति है।

3. भाषा वर्णनात्मक है।

(घ) पागलों को लारियों से निकालना और उनको दूसरे अफसरों के हवाले करना पड़ा कठिन काम था, बाज तो बाहर निकलते ही नहीं थे, जो निकलने पर राजी होते थे, उनको संभालना मुश्किल हो जाता था, क्योंकि वह इधर-उधर भाग उठते थे, जो नंगे थे, उनको कपड़े पहनाए जाते तो वह उन्हें फाड़कर अपने तन से जुदा कर देते। कोई गालियां बक रहा है. .....कोई गा रहा है.....कुछ आपस में झगड़ रहे हैं.....कुछ रो रहे हैं, बिलख रहे हैं.....कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती थी.....पागल औरतों का शोरगुल अलग था और सर्दी इतनी कड़ाके की थी कि दांत से दांत बज रहे थे।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पंक्तियां पंजाबी कहानीकार सआदत हसन मण्टो द्वारा रचित कहानी 'टोबा टेक सिंह' के कारण अपनी मातृ भूमि छोड़ने के दुख से पागल हो चुके लोगों की व्यथा का वर्णन है। पागलखाने में भारत-पाकिस्तान दोनों के बेघर हुए लोगों की भीड़ है। पागलखाने के अफसर पहचान हो चुके लोगों को उनके देश भेजना चाहते हैं, लेकिन पागल लोगों की स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक ने बताया है कि

व्याख्या–लेकर आए हुए पागलों को ट्रकों से निकालना और उन्हें दूसरे अफसरों को सौंपना भी बहुत कठिन कार्य था, क्योंकि

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

भारतीय कहानी

मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा की कहानियां

दीदी : विश्लेषण और मूल्यांकन

1

परिचय

मलयालम भाषा प्रमुखत: भारत के केरल राज्य में बोली जाती है, परंतु अन्य राज्यों में मलयालम भाषी कम ही हैं। पूरे भारत में लगभग साढ़े तीन करोड़ लोग मलयालम भाषा बोलते हैं। मलयालम भाषा केरल के उच्च शिक्षा स्तर के कारण अधिक पुरानी न होने पर भी साहित्य की संरचना में सशक्त है। कहानी मलयालम भाषा की प्रमुख विधा है। एम.टी. वासुदेवन नायर जो 'एम.टी' नाम से प्रसिद्ध है और मलयालम कहानी के विकास के तीसरे दौर के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उनकी पूर्व पीढ़ी मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित तकषी शिवशंकर पिल्लै की थी। पिल्लै की रचनाएं यथार्थवाद के ठोस धरातल पर गठित थीं। वे गरीब, शोषित एवं मेहनती वर्ग की भलाई हेतु समाज को बदलना चाहते थे। एम.टी. की पीढ़ी ने व्यक्ति के मन की गहराइयों में पैठकर, उनके विचारों को बिना काट-छांटकर रचनाओं में जाहिर किया। एम.टी. की पूर्व पीढ़ी के रचनाकारों तकषी, बशीर, पोट्टक्काट आदि ने व्यक्ति से विमुख होकर सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में समस्याओं का मूल्यांकन करने एवं उन्हें सुलझाने का प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद लोगों की आशाएं पूरी नहीं हुईं। केरल में वामपंथी सरकार सत्ता में आई थी, लेकिन जल्दी ही गिर गई। वामपंथी आंदोलन और भूमि सुधार ने आम जनता की हालत में बदलाव जरूर किया था, लेकिन मध्यवर्ग निराशा एवं व्यर्थताबोध से पीड़ित था। वामपंथी विचारधारा और वामपंथी सरकार के सुधारात्मक कदमों से सामंतशाही मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के विघटन वाले परिवेश में व्यक्ति चरित्र को प्रगतिवादी रचनाकार नहीं समझ पाए। मेहनती व मजदूर वर्ग की तरह ये भी अभावों से पीड़ित थे, लेकिन मूल्यबोध के कारण वामपंथी विचारधारा को नकार दिया। एम.टी. ने अपने कथा साहित्य में इसी मध्यवर्ग की निराशा, व्यर्थता व प्रतिरोध को स्थान दिया। समाज में जिंदगी, रिश्ते, मुश्किलें व तकलीफें भी यथार्थवाद में शामिल हैं। एम.टी. की सर्जनात्मकता ने पूर्व पीढ़ी से अलग रास्ता आत्मसात करते हुए सर्जनात्मक क्षेत्र पर अपनी गहरी छाप दर्ज की है।

प्रस्तुत अध्याय में एम.टी. वासुदेवन नायर का परिचय, जीवन, साहित्य, मलयालम कहानी में उनका योगदान, उनके विचार, 'दीदी' कहानी का कथानक, आयाम, भाषा-शैली आदि की चर्चा की जाएगी।

अध्याय का विहंगावलोकन

लेखक का परिचय

एम.टी. वासुदेवन नायर मलयालम भाषा के विख्यात साहित्यकार हैं। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता रहे हैं। इनके द्वारा रचित एक उपन्यास 'कालम' के लिये उन्हें सन 1970 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एम. टी. वासुदेवन नायर (जन्म 9 अगस्त, 1933) भारतीय लेखक, पटकथा लेखक और फिल्म निर्देशक हैं। वे आधुनिक मलयालम साहित्य में एक विपुल और बहुमुखी लेखक हैं और

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

स्वतंत्रता के बाद के भारतीय साहित्य के रचनाकारों में से एक हैं। उनका जन्म कुडल्लूर में हुआ था, जो आज के पट्टंबी तालुक, पलक्कड़ जिले (पालघाट) के एक छोटे से गाँव में है, जो ब्रिटिश राज के मद्रास प्रेसीडेंसी में मालाबार जिले के अंतर्गत आता था। उन्होंने 20 साल की उम्र में एक रसायन विज्ञान स्नातक के रूप में ख्याति अर्जित की, उन्होंने द न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून द्वारा आयोजित विश्व लघु कथा प्रतियोगिता में मलयालम में सर्वश्रेष्ठ लघु कहानी के लिए पुरस्कार जीता। उनका पहला उपन्यास 'नालुकेट्टू' (पैतृक घर अंग्रेजी में अनूदित विरासत के रूप में अनुवादित), 23 वर्ष की आयु में लिखा गया, 1958 में केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। उनके अन्य उपन्यासों में 'मंजू' (धुंध), 'कालम' (समय), 'असुरविथु' (द प्रोडिगैल) शामिल हैं। 'बेटा - द डिमोन सीड' के रूप में अंग्रेजी में अनुवाद किया गया अपने शुरुआती दिनों के गहरे भावनात्मक अनुभव एम.टी. के उपन्यासों के निर्माण में चले गए हैं। उनकी अधिकांश रचनाएं मूल मलयालम पारिवारिक संरचना और संस्कृति की ओर उन्मुख हैं और उनमें से कई मलयालम साहित्य के इतिहास में पथ-प्रदर्शक थे। केरल में मातृसत्तात्मक परिवार में जीवन पर उनके तीन सेमिनरी उपन्यास हैं 'नालुकेट्टू', 'असुरविथु' और 'कालम'। भीमसेना की दृष्टि से 'महाभारत' की कहानी को फिर से पढ़ने वाली 'रंदामुझम' को उनकी कृति के रूप में व्यापक रूप से श्रेय दिया जाता है।

एम.टी. वासुदेवन नायर एक पटकथा लेखक और मलयालम फिल्मों के निर्देशक हैं। उन्होंने सात फिल्मों का निर्देशन किया है और लगभग 54 फिल्मों के लिए पटकथा लिखी है। उन्होंने चार बार सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता ओरु वडक्कन वीरगाथा (1989), कदवु (1991), सदायम (1992), और परिनयम (1994), जो पटकथा श्रेणी में किसी के द्वारा लिखित सबसे अधिक है। उन्हें मलयालम साहित्य में उनके समग्र योगदान के लिए 1995 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया था। 2005 में भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मभूषण उन्हें प्रदान किया गया। उन्होंने साहित्य अकादमी पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, वायलार पुरस्कार, वल्लथोल पुरस्कार, एझुथचन पुरस्कार और मातृभूमि साहित्य पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कार और मान्यता प्राप्त की है। उन्हें वर्ष 2013 के लिए मलयालम सिनेमा में जीवन भर की उपलब्धि के लिए जेसी डैनियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कई वर्षों तक 'मातृभूमि इलस्ट्रेटेड वीकली' के संपादक के रूप में कार्य किया।

वासुदेवन का जन्म 9 अगस्त 1933 को कुडल्लूर में वर्तमान पलक्कड़ जिले में हुआ था। वे टी. नारायणन नायर और अम्मालू अम्मा से पैदा हुए चार बच्चों में सबसे छोटे थे। उनके पिता सीलोन में थे और उन्होंने अपने शुरुआती दिन कुडल्लूर में और अपने पिता के घर पुन्नयुरकुलम में, जो वर्तमान त्रिशूर जिले के एक गाँव में था। उन्होंने अपनी स्कूलिंग मालमाक्वावु प्राथमिक स्कूल और कुमारानेलोर हाई स्कूल से पूरी की। उन्हें हाई स्कूल के बाद शिक्षा को छोड़ना पड़ा, और जब उन्होंने 1949 में कॉलेज में दाखिला लिया, तो उन्हें विज्ञान की धारा का चयन करने की सलाह दी गई, क्योंकि यह महसूस किया गया कि विज्ञान में एक डिग्री ने किसी भी अन्य डिग्री की तुलना में तेजी से नौकरी हासिल की। उन्होंने 1953 में विक्टोरिया कॉलेज, पलक्कड़ से केमिस्ट्री में डिग्री प्राप्त की। उन्होंने एक साल के लिए पट्टांबी बोर्ड हाई स्कूल और चावक्कड बोर्ड हाई स्कूल में गणित पढ़ाया और 1955-56 में एम.बी. ट्यूटोरियल कॉलेज, पलक्कड़ में काम किया। उन्होंने 'मथुर्भु' साप्ताहिक के उपमन्त्री के रूप में शामिल होने से पहले कुछ हफ्तों तक कन्नूर के तलिपारम्बा में एक खंड विकास कार्यालय में ग्रामसेवक के रूप में भी काम किया।

एम.टी. की दो बार शादी हो चुकी है। उन्होंने 1965 में लेखक और अनुवादक प्रमेला से शादी की। शादी के 11 साल बाद वे अलग हो गए। इस विवाह से उनकी एक बेटी, सीथारा है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में एक व्यवसायिक कार्यकारी के रूप में काम करती है। उन्होंने दूसरा विवाह नृत्य कलाकार कलामंडलम सरस्वती से किया, जिनके साथ उनकी एक बेटी, नर्तकी असावथी नायर है। एम.टी. अपनी सबसे बड़ी बेटी के नाम पर सीथारा, कोट्टारम रोड, कालीकट में रहते हैं।

एम.टी. ने बहुत कम उम्र में लिखना शुरू किया, जो उनके बड़े भाइयों से प्रेरित था, जिन्होंने कई साहित्यिक पत्रिकाओं और कवि अक्खितम अच्युतन नमोबोथिरी में बार-बार लिखा था, जो हाई स्कूल में उनके वरिष्ठ थे। उन्होंने शुरू में कविताएँ लिखीं, लेकिन जल्द ही गद्य लेखन में बदल गईं। उनका पहला प्रकाशित काम प्राचीन भारत के हीरा उद्योग पर एक निबंध था, जिसका शीर्षक 'प्रचेनाभराथथिले वायरा व्यवास्यम' था, जो गुरुवयूर के सीजी नायर द्वारा प्रकाशित द्विवार्षिक रूप से केरलाक्षेम में दिखाई दिया था। उनकी पहली कहानी 'विशुवघोषम'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

1948 में मद्रास-आधारित 'चित्रकल्लम' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी एक लड़के की भावनाओं की पड़ताल करती है कि वह खुद के पटाखे रखने के लिए बहुत गरीब है, क्योंकि वह घरों के घरों से आने वाली दरार की आवाज सुनता है, विशु के नए साल के त्यौहार का जश्न मनाने वाले अमीर, नुकसान की भारी भावना, दर्दनाक एहसास है कि ये चीजें हैं और जिस तरह से वे रहने की संभावना है। उनकी पहली पुस्तक, रक्थम पुरंडा मनलथिरक्कल 1952 में प्रकाशित हुई थी।

एम.टी. का पहला साहित्यिक पुरस्कार उन्हें तब मिला, जब वह विक्टोरिया कॉलेज, पलक्कड़ में एक छात्र थे उनकी लघु कहानी (वेलारथुमृगंगल) (पेट एनिमल्स) ने द न्यू यॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून, हिंदुस्तान टाइम्स और मातृभूमि में आयोजित विश्व लघु कथा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता था। 1954 सर्कस में कलाकारों की दयनीय दुर्दशा को दर्शाती एक छोटी कहानी थी। कई कहानियां जो विषयों से जुड़ी हुई थीं, वे व्यापक रूप से अलग-अलग मिलियन्स और संदर्भों से अलग थीं, लेकिन समान रूप से सफल और लोकप्रिय थीं।

उनकी कहानियों के विख्यात संग्रहों में इरुत्तीन अठमावु, ओलवम थेरवुम, बंधनम, वारिकुझी, डारे-ए-सलाम, स्वरगम थुरक्कुन्ना सम्यम, वानप्रथम और शरलॉक हैं। 'इरुटिन्टे एथमावु' ('सोल ऑफ डार्कनेस'), जो कि उनकी लघु कहानियों में सबसे ज्यादा चर्चित है, एक 21 वर्षीय व्यक्ति की हृदय विदारक कहानी है, जिसे हर किसी के लिए एक घृणित माना जाता है और इसका इलाज किया जाता है। कहानी सभ्य और कथित रूप से समझदार दुनिया के पीछे के पागलपन को उजागर करती है। 'शर्लक' कहानी एम.टी. के पाठकों और अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की परिष्कृत दुनिया से परिचित ग्रामीण मील के पत्थर के बीच चलती है, उनके बीच सूक्ष्म विडंबना के साथ इसके विपरीत को उजागर करती है। एम.टी. ने प्रतीत होता है मूर्खतापूर्ण ग्रामीण जीवन ('कुरुकांते कल्याणम' या 'द जैकाल की शादी' और 'शिलालिखींगल' या 'स्टोन शिलालेख') और निजीकरणों के दिल में छिपी क्रूरता को कृषि चक्र पर निर्भर लोगों द्वारा सहन किया, 'कार्कोटाकोम' और 'पल्लीवलम कलचिलंबम' या 'पवित्र तलवार और पायल')। 'वानप्रस्थम' कहानी में, उन्होंने एक शिक्षक और एक छात्र के बीच नाजुक संतुलित संबंध का अध्ययन किया है, जो चमत्कारिक रूप से वर्षों से जीवित है।

एम.टी. वासुदेवन नायर का मत है कि लघुकथा एक शैली है, जिसमें एक लेखक पूर्णता के करीब पहुंच सकता है। उन्होंने टी. पद्मनाभन के साथ, तथाकथित पुनर्जागरण के, और पचास के दशक और साठ के दशक की नई लघु कहानी, मलयालम में शुरुआती आधुनिक लघु कथाकारों के बीच सेतु का काम किया।

एम.टी. का पहला उपन्यास 'पथिरावुम पकलवेलिचवम' (मिडनाइट एंड डेलाइट) 1957 में 'मातृभूमि' साप्ताहिक में प्रसारित किया गया था। उनका पहला प्रमुख काम 'नालुकेटु' एक सामान्य संयुक्त परिवार में मौजूद स्थिति का सत्य चित्रण है। यह शीर्षक नायर संयुक्त परिवार के पारंपरिक पैतृक घर (तरवाड़) के नालुकेट्टू का है। उपन्यास मलयालम उपन्यास में एक क्लासिक बना हुआ है। इसने 1950 के दशक में एसके पॉट्टेकट्ट, ठाकाजी शिवसंकरा पिल्लई, वैक्कोम मुहम्मद बशीर और उरोब द्वारा शुरू की गई एक साहित्यिक परंपरा के नवीनीकरण में योगदान दिया। इसे 1959 में केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था। इसके 23 पुनर्मुद्रण हुए हैं और 14 भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया था और इसकी आधे मिलियन प्रतियों की रिकॉर्ड बिक्री हुई और अभी भी सर्वश्रेष्ठ विक्रेता सूची में शामिल है। 1995 में एम.टी. ने स्वयं दूरदर्शन के लिए एक टेलीविजन फिल्म में उपन्यास को रूपांतरित किया। इसने वर्ष 1996 के लिए केरल राज्य टेलीविजन पुरस्कार जीता।

असुरविथु (द डेमन सीड; 1972), जो किजक्किमुरी नाम के एक काल्पनिक वल्लुवदन गांव में स्थापित है, को लगभग नालुकेट्टू की अगली कड़ी माना जा सकता है। इसकी एक ही भू-भौतिकीय और सामाजिक-सांस्कृतिक सेटिंग है। उपन्यास में नायक गोविंदकुट्टी, नायर थारवडु के सबसे छोटे बेटे की दुर्दशा का वर्णन करता है, क्योंकि वह सामाजिक परिदृश्य, सामाजिक अन्याय और अपनी आंतरिक चेतना के बीच फंस गया है। 'असुरविथु' में स्वदेशी संस्कृति और परिवार और समुदाय के विघटन के प्रदूषण में एक विदेशी संस्कृति के हानिकारक प्रभाव के स्पष्ट संकेत हैं। ये दो शुरुआती उपन्यास-नालुकेट्टू और असुरविथु-एक चरण है, जिसमें केरल के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में लक्षण प्रकट हुए, जो बाद के स्तर पर खतरनाक पारिस्थितिक प्रवृत्ति में विकसित होने थे।

उनके बाद के उपन्यास, जैसे कि मंजू (धुंध; 1964) और कालम (समय; 1969), विपुल गीतकार की विशेषता है, जो नालुकेटु या असुरविथु में नहीं पाए जा सकते हैं। पितृसत्तात्मक

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

वर्चस्व और शोषण के इको-फेमिनिस्ट विषय 'मंजू' महिला नायक (विमला) के साथ एम.टी. के एकमात्र उपन्यास में अधिक प्रमुखता से है। नैनीताल के शानदार परिदृश्य में स्थित यह वल्लुवनादरा गाँव से अलग एक मील के पत्थर के रूप में अलग खड़ा है। उपन्यास का कथानक कथित तौर पर निर्मल वर्मा की हिंदी कहानी 'परिंदे' (पक्षी, 1956) से मिलता-जुलता है। हालांकि एम.टी. और वर्मा दोनों ने इन दावों को खारिज कर दिया है।

उपन्यास 'कालम' में एम.टी. अपने पसंदीदा मील के पत्थर पर लौटते हैं, जीर्ण-शीर्ण संयुक्त-परिवार नायर तारवाड़, एक स्वतंत्र भारत में केरल के ढहते मातृसत्तात्मक आदेश की पृष्ठभूमि में वल्लुवदन गांव की व्यापक पृष्ठभूमि के खिलाफ सेट है। सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन की रूपरेखाओं के कारण, सेतु, नायक, सबसे ऊपर हैं। 'कालम' हालांकि सख्ती से आत्मकथात्मक नहीं है, किंतु इसमें एक मजबूत आत्मकथात्मक तत्त्व है। मंजू ने 1983 में एक फिल्म अनुकूलन किया था, जिसे स्वयं एम.टी. ने लिखा और निर्देशित किया था। उपन्यास में 'सारथ संध्या' नामक एक हिंदी भाषा की फिल्म का रूपांतरण भी था।

रंदामुझम (द सेकंड टर्न; 1984), व्यापक रूप से लेखक की कृति के रूप में माना जाता है, भीमसेना की दृष्टि से महाभारत की कहानी को फिर से चित्रित करता है, जिसे वायु का पुत्र माना जाता है; इस उपन्यास में, भीम को लेखक के विडंबनापूर्ण उपक्रमों के माध्यम से एक नई मनोवैज्ञानिक गहराई का लाभ मिलता है।

एम.टी. का नवीनतम उपन्यास वाराणसी (2002) है, जो उत्तर भारत के एक तीर्थस्थल वाराणसी की एक भावनात्मक यात्रा है। प्रोफेसर श्रीनिवासन के पत्र के साथ वाराणसी खुल जाता है, नायक अपनी पुरानी किताबों में उनकी अधूरी थीसिस का जिक्र करते हैं। प्रोफेसर उसे अपने घर वाराणसी में आमंत्रित करता है। सुधाकरन, अपने साठ के दशक में, और एक प्रोस्टेट प्रक्रिया से उबरकर, प्रोफेसर को आश्चर्यचकित करने का फैसला करता है। वह आने पर महसूस करता है कि प्रोफेसर की हाल ही में ही मृत्यु हो गई है। कहानी समय के बदलावों में, यादों की एक श्रृंखला के साथ विकसित होती है। कथन में तीसरा, पहला और दूसरा व्यक्ति शामिल है। वाराणसी के लिए ट्रेन में, सुधाकरन ने सुमिता नागपाल द्वारा लिखी पुस्तक 'काशी: द इटरनल सिटी' की घोषणा की, जिसमें उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि जब तक सुधाकरन ने पुस्तक को समाप्त नहीं किया, तब तक उन्होंने अपने जीवन, अपनी महिलाओं, अपने शुभचिंतकों के निधन को देखा, वाराणसी, मुंबई, बैंगलोर, पेरिस और मद्रास से गुजरे। उन्होंने विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति के लिए अपने प्रोफेसर द्वारा सुझाए गए कि उन्हें अपनी थीसिस को पूरा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह प्रोफेसर का अंतिम संस्कार भी करता है, क्योंकि उसकी खुद की अता पिंडम (मृत्यु की प्रत्याशा में किसी का अंतिम संस्कार भी) है। दशाश्वमेध घाट पर, सुमिता, जो अब एक बुजुर्ग महिला है, केवल उसके पास से गुजरती है, उसे पहचानती तक नहीं। कोई जटिल साजिश के साथ, उपन्यास एक प्रयोग है। साहित्यिक मंडलियों में इसे खूब सराहा गया, लेकिन आलोचक और चित्रकार एम.वी. देवन से आलोचना मिली।

एम.टी. ने एन.पी. मोहम्मद के साथ 'अरबी पोन्नू' (अरब का सोना) उपन्यास लिखा। एम.टी. और मोहम्मद इस काम को पूरा करने के लिए दो सप्ताह की अवधि के लिए कोझीकोड के करुवाराकुंडु गांव में एक किराए के घर में रहे।

एम.टी. ने लेखन के शिल्प पर दो किताबें लिखी हैं 'काथिकांटे पनीपुरा' और 'काथिकांटे कला' और विभिन्न विषयों पर उनके उपाख्यान स्तंभ लेख और विभिन्न अवसरों पर भाषणों में किलिवाथिल्लूड, कन्ननथालिपुक्कलुडे कालम, वक्कुकालुदे विस्मयाम् और इयाक्कालुकुदालमुदादे शीर्षक के तहत संकलित किया गया है। 'मनुशियर निझालुकल' और 'आलोककूटथिल थानिये' उनके यात्रा वृत्तांत हैं।

उन्होंने केरल साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और तुचन मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष सहित विभिन्न साहित्यिक निकायों में कई महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली पदों पर कार्य किया। वे केंद्र साहित्य अकादमी के कार्यकारी सदस्य थे। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के पास अपने संग्रह में बासठ पुस्तकें हैं, जिनमें ज्यादातर एम.टी. और कुछ उन पर हैं। साथ ही, उनमें से कुछ अंग्रेजी में उनके कार्यों के अनुवाद हैं। एम.टी. 1956 में 'मातृभूमि' समूह के प्रकाशनों में शामिल हो गए। जब वे 1998 में वहां से सेवानिवृत्त हुए, तो वे समय-समय पर उनके संपादक और 'मातृभूमि इलस्ट्रेटेड वीकली' के मुख्य संपादक थे। 2 जून 1996 को, उन्हें कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा मानद डी. लिट. की डिग्री प्रदान की गई।

एम.टी. वासुदेवन नायर मलयालम सिनेमा में सबसे प्रतिष्ठित और अच्छी तरह से स्वीकृत स्क्रिप्ट लेखकों और निर्देशकों में से

ww.neerajbooks.com